आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

● वर्ष - 10 ● अंक-2567 ● उदयपुर, मंगलवार 04 जनवरी, 2022 ● प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन ● कुल पृष्ठ : 4 ● मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

फिर जुड़ेंगे... बिखरे सपने

अनिल की जिंदगी में सबकुछ ठीक चल रहा था कि एक हादसे ने उसके सारे सपने बिखेर दिए। वह निर्माण कार्यो पर बेलदारी करके अपने वृद्ध पिता को परिवार पालन में मदद करता था। कभी–कभी कुदरत किसी के साथ ऐसा कर जाती है कि व्यक्ति टूट जाता है।

राजगढ़ (मध्यप्रदेश) निवासी किसान शिवनारायण वर्मा के पुत्र अनिल (23) के साथ ऐसा ही हुआ। एक साल पहले तक वह मजदूरी करते हुए जल्दी ही अपना घर–संसार बसाने का सपना देख रहा था। एक दिन अपने कार्यस्थल पर काम करते हुए अचानक करंट लगा और वो बेसुध होकर गिर पड़ा वहां मौजूद लोग व उनका भाई तत्काल निकटवर्ती जावरा के सिविल हॉस्पीटल लेकर पहुंचे। प्राथमिक उपचार के बाद हादसे की गंभीरता को देखते हुए उन्हें भोपाल के बड़े अस्पताल के लिए रैफर किया गया। जहां करीब दो महीने तक इलाज चला लेकिन दोनों हाथ और एक पैर को काटकर ही जिंदगी को बचाया जा सका।

यह स्थिति अनिल व उसके परिवार के लिए अत्यंत दुःखदायी थी। आत्मनिर्भर अनिल अब दूसरों के सहारे था। आंखों से हरदम आंसू टपकते थे। भविष्य अंधकार में था। इलाज के बाद घर लौटने पर पिता और माँ नवरंग बाई कितना ही दिलासा देते किंतु अनिल की आंखे शून्य में ही खोई रहती थी। करीब 10–11 महीने बाद वर्मा परिवार के किसी परिचित ने अनिल को कृत्रिम हाथ–पैर लगवाने की सलाह दी।

किंतु गरीबी आड़े आ रही थी। उसी व्यक्ति ने एक दिन फिर उसे अपनी बात याद दिलाते हुए उदयपुर के नारायण सेवा संस्थान जाने के लिए कहा। जहां निःशुल्क आधुनिक तकनीक पर आधारित कृत्रिम अंग लगाए जाते हैं। अनिल अपने पिता के साथ 30 सितंबर को उदयपुर आए जहां करीब एक सप्ताह के आवास के दौरान उनके कृत्रिम अंग लगाए गए। जिनके सहारे अब वे उठते–बैठते और धीरे–धीरे चलते भी हैं। अनिल ने संस्थान से लौटते हुए कहा कि वह अपने बिखरे हुए सपनों को फिर से जोड़ने की कोशिश तो करेगा ही बुजुर्ग मां–बाप का सहारा भी बनेगा।

बढ़ चले थमे पांव

मथुरा निवासी केशव शर्मा (20) ने आईटीआई उत्तीर्ण कर शहर में ही कम्प्यूटर सुधार का काम शुरू किया। माता संतोष गृहिणी हैं, जबकि पिता विनोद शर्मा एक मसाला फैक्ट्री में काम करते हैं। केशव करीब तीन वर्ष पहले मथुरा के स्टेट बैंक चौराहा से बाइक पर घर लौट रहे थे कि सामने से आते एक ट्रैक्टर से भिड़ंत हो गई। जिससे बाए पांव में फैक्चर हो गया। नजदीकी हॉस्पीटल में प्राथमिक उपचार के बाद दिल्ली में करीब 6–7 ऑपरेशन हुए किन्तु पांव ठीक नहीं हो सका। डॉक्टरों के अनुसार पांव की नसें काफी क्षतिग्रस्त हो गई थी।

उन्होंने पांव को काटने की सलाह दी लेकिन परिवार ने तब ऐसा करना उचित नहीं समझा। मथुरा आने के बाद केशव की हालत और बिगड़ गई और यही के एक अस्पताल में अनततोगत्वा डॉक्टरों की सलाह पर पांव को कटवाना ही पड़ा। पांव काटने से जिन्दगी मानों ठहर–सी गई। काम काज सब छूट गया। इलाज में परिवार की आर्थिक स्थिति भी खराब हो गई। परिचितों ने कृत्रिम पांव लगवाने की सलाह दी किन्तु आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण यह सम्भव नहीं हुआ।

कुछ समय बाद नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर में निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाने की टी.वी पर सूचना देखकर पिता के साथ नवम्बर 2021 के द्वितिय सप्ताह में उदयपुर आए जहां उनके कृत्रिम पांव लगाया गया। अब वे बिना सहारे खड़े भी होते हैं और चलते भी हैं।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
रविवार 9 जनवरी 2022 प्रातः 11.00 बजे से

सुजावाद भवन, नई सड़क, ग्वालियर (म.प्र.) 7412060406

जैन मंदिर, जैनधर्मशाला, 56/62 शाहचन्द, जीरो रोड, अजंता सिनेमा के पास, प्रयागराज, यूपी 9351230393

रविवार 8 जनवरी 2022 प्रातः 5.00 बजे से

मेघराज भवन, नियर संतोषी माता मंदिर, इसामिया बाजार, कोठी, हैदराबाद, 9573938038

इस सम्मान समारोह में
सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
रविवार 9 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान

मुम्बई माता बाल संयोजन संस्था, महात्मा गांधी, विद्यालय के सामने, वाडा रोड, राजगुरु नगर, पूणे, महाराष्ट्र

समर्पण, अशोक विहार कॉलोनी, फेज-1, पहाड़िया, वाराणसी, उत्तरप्रदेश

पारस मंगल कार्यालय, पारस नगर, शेंदुर्णी जलगांव, महाराष्ट्र

साय साक्षी संघ, एल.आई.जी. 9/3, प्रथम तल इंदिरा फेस, 4, के.पी.एच.बी. कॉलोनी, लोढा काम्पलेक्स के पास, कुकटपल्ली, तेलंगाना, आन्ध्रप्रदेश

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

इंसान कैसे बड़ा बनता है?

एक जमाना था जब गाँव का कोई इन्सान रात को भी दुख से कराह देता था, तो पास–पड़ोस के लोग उसको देखने, खैर खैरियत लेने के लिए, उसकी परेशानी को जानने के लिए अपने घरों से निकल कर उसकी तरफ दौड़ पड़ते थे। लेकिन इन्सान–इन्सान को पहचानता था। उसके दुख दर्द में काम आता था। मगर आज का नक्शा बदला हुआ है।

आज दुनिया बड़ी–बड़ी शिक्षा, बड़ी–बड़ी डिग्रियों का ज्ञान सीख रही है। नित नये–नये आविष्कार हो रहे हैं। लोगों की जिन्दगी में कामयाब होने का तरीका सिखाया जा रहा है। किस तरह दौलत हासिल होती है, ये गुण हासिल किया जा रहा है। नई–नई टैक्नालॉजी से इन्सान का ज्ञान बढ़ाया जा रहा है। उसे इन्टेलीजेन्ट बनाया जा रहा है। इससे इन्सान दिनोंदिन तरक्की कर रहा है।

सवाल यह है कि क्या इन्सानियत भी कहीं जिंदा है? क्या उसे भी पाला पोसा जा रहा है?

अगर नहीं तो वो ज्ञान बेकार है जो इन्सानों को तरक्की करना तो सिखाए मगर जिन्दगी गुजारने का तरीका न सिखाए।

आज लोग जो ज्ञान हासिल कर रहे हैं, उससे इन्सान मशीन बनता जा रहा है। उसके ऊपर माँ–बाप, भाई–बहन और पड़ोसियों का क्या हक है, क्या फर्ज है उसे मालूम नहीं। वो इन्सान के किसी भी दर्द को नहीं जानता, अपनों का दर्द नहीं समझता

आखिर इतने ज्ञान और नॉलेज का क्या मतलब? जो इन्सान को इन्सानी हमदर्दी न सिखाए।

आज दुनिया को सबसे ज्यादा खतरा पढ़े–लिखे लोगों से हैं। अनपढ़ किसान हल बनाकर बैल के जरिए खेतों में खेती करता है और देश व दुनिया के काम आता है।

वो बंदूक और बम नहीं बनाता, मगर पढ़े–लिखे और विकसित लोगों ने इन्सानों को तबाह व बर्बाद करने के लिए परमाणु बम जैसे खतरनाक हथियार बना लिए हैं। ऐसा नॉलेज आ जाने के बाद गुमराही के सिवा और क्या हो सकता है?

याद रखें–ऊँचा पद, धन, शिक्षा की लम्बी–चौड़ी डिग्रियाँ या रुतबा समाज व सरकार द्वारा पदवियाँ ये मनुष्य को बड़ा नहीं बना सकते। बड़ा बनाती है मानवता, दया, करुणा, सेवा परोपकार।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

कैकेयी में इतने विकार आ गये? मंथरा इतनी दुष्टा बन गई? पर अहित कर रही है, खुद का भी अहित कर रही है। ये ब्लडप्रेशर, डायबीटीज, ये आर्थराईटिस ये क्यों होते हैं? बहुत क्रोध करते हैं, बहुत व्याकुल होते हैं, बहुत लालच करते हैं। हाँ, घर में झगड़ा करते हैं, पत्नी का भी मान नहीं रखते हैं। बहुत, ये भूल जाईये। जितना पुरुष प्रधानता उतनी ही नारी प्रधानता है। नर और नारी बोलो।

नर और नारी–एक समान।
जाति वंश सब, एक समान
मानव मात्र–एक समान।

बस यो आपणे कथा रो मर्म है। या सौ ताला री एक चाबी है। आजऊं आपणो व्यवहार बढ़िया करलां। दशरथ जी अचेत वेईग्या बाद में चेत आयो। अरे! कैकेयी!

जो सुनि सरहु अस लाग तुम्हारे।
काहे न बोलहू वचन सम्भारे।।

ये वरदान मती ले। तो कैकेयी कई बोली– पहले क्यूं कहा ले लो? रामजी की सौगन्ध है। प्राण जाई पर वचन न जाई, रघुकुल रीत सदा चली आई। कैकेयी जले पे नमक है ना? ऐसी दुष्ट क्या कहें? दशरथ जी बार–बार कहते हैं– मेरी रानी तूं तो कहती थी राम बहुत भले हैं। तूं यदि भरत को राज्य देना ही चाहती है तो कोई बात नहीं। मैं तेरा एक वरदान। मन में सोच लिया था वरदान नहीं शाप मांग लिया। अपने कुल को कलंकित कर दिया। अपने कुल को नष्ट करने का काम कर लिया।

दशरथ जी कहते हैं। मैं छोटे–बड़े का विचार करके कर रहा था। सौगन्ध खाके बोलता हूँ– कौशल्या ने मुझे कुछ नहीं बोला। तूं सोचती होगी कौशल्या ने मुझे कहा होगा– राम को राजा बना दो, युवराज बना दो। नहीं नहीं नहीं। परन्तु हाँ, मेरी गलती रही मैंने तेरे से बात नहीं की।

यदि मैं तेरे से बात कर लेता, मन में सोच रहे हैं। मन में सोच रहे हैं ये दुष्ट नाग है। मन में सोच रहे हैं ये पापिणी है। लेकिन किसी तरह से काम बन जाए। बोले– भरत को राज्य मैं कल ही दे देता हूँ। कल बुला लेता हूँ, दूत भेज देता हूँ। कल या परसों राज्य दे दूंगा, लेकिन तूं अपना एक वचन वापिस ले ले। एक वचन वापिस ले ले। राम को यहीं रहने दे। राम–भरत में बड़ा प्रेम है।

सम्पादकीय

एक प्रसिद्ध कवि ने बहुत ही प्रेरक गीत लिखा है– सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा। इसके पीछे अनेक प्रकार की भावात्मक बातें है हमारा मुल्क हमारे लिये सर्वश्रेष्ठ तो होता ही है, किन्तु कई ऐसी विशेषतायें भी हैं जो भारत को विश्व के अन्य देशों से अलग व श्रेष्ठ सिद्ध करती है। यह अपना ही देश है जहाँ विश्व के लगभग सभी धर्मों के अनुयायी रहते हैं। न केवल रहते हैं वरन उनका सामाजिक ताना बाना भी सुदृढ़ है। सर्वधर्म समभाव के वाक्य को चरितार्थ होता देखना हो तो यहां है। ज्ञान और विज्ञान का समन्वय यहां सदियों से हैं। विज्ञान को भौतिक व ज्ञान को आध्यात्मिक उन्नति का आधार माना गया है। ज्ञानी और विज्ञानी को यहाँ समान सम्मान मिलता रहा है। यहां की एक और परम उपलब्धि है कि भारतीय संस्कृति ने सभी संस्कृतियों को आत्मसात् किया है। हरेक धर्म व संस्कृति को पूरा सम्मान दिया है। सबके कल्याण का भाव भी यहीं दिखाई देता है। इसलिये तो जहां से अच्छा है हमारा देश।

कुछ काव्यमय

कोई भी देश
केवल भूमि का खण्ड
नहीं होता है।
वह अपने निवासियों को अपनी
गरिमा, संस्कृति और
भावनाओं में भिगोता है।
अपने देश को इसमें महारत है।
इसलिये सबसे ऊँचा भारत है।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

प्रेम का रिश्ता

सीढ़ियों से होकर मन्दिर पर पधारे तो साध्य हमारा मन्दिर जी के दर्शन नहीं है। साध्य परमात्मा की कृपा प्राप्त करनी है। साध्य कृष्ण है। भगवान को कितना ज्ञानी कहते है विश्व गुरु, योग गुरु, जगत गुरु, पूरे ब्रह्माण्ड के गुरु तो ऐसे हमारे कृष्ण भगवान से हम ये प्रार्थना करें कि गिरिराज पर्वत उठाये तो अकेले भगवान ने उठाया था–अपनी अंगुली पर। लेकिन लोग साथ आते गये किसी की लकड़ियाँ निहाल हो गयी। किसी के हाथ निहाल हो गये। किसी के कन्धे निहाल हो गये। किसी के पंजे निहाल हो गये। आप और हमारे पर परमात्मा पर बड़ी कृपा है।

शांति क्रांति कल्याण जगत में।
सृजन प्रलय का खेल
प्रगति बिन
पच्चीस से मिल जा।

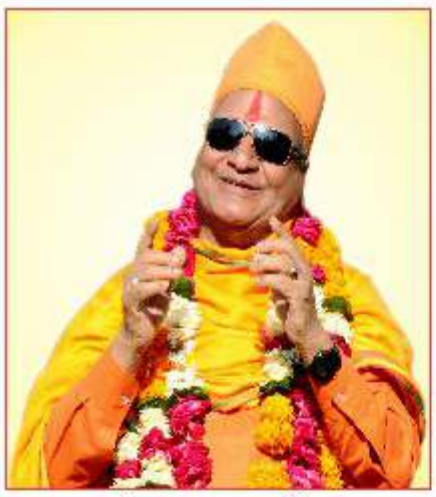

पंच तत्व का मेल
यहाँ खिल जा।।

मैंने तो यह पाया बाबूजी। कभी–कभी आदमी कहता है अरे ! आपको मालूम नहीं कितना पसीना बहाता हूँ? दूकान पर कितनी मेहनत करता हूँ? कारखाने में कितना परिश्रम करता हूँ? लेकिन हो सकता है आपकी पूज्य माताश्री, आपके पूज्य मामी श्री आपकी धर्मपत्नी जी, आपकी बेटी, आपकी भुआ जी आपके दादा जी, आपकी ताईजी की वजह से आपका पसीना भी सफल हो रहा हो। क्योंकि कहते है कि ये घर है ना किसी एक की तपस्या से चल रहा है केवल मेहनत से नहीं चलता है। बाबूड़ा आप और हमारा बचपन याद करें। कल भी लगेगा पिताजी ने कहा होगा, अरे! घर छोड़कर मत जाना।

ताऊजी कितना भी गुस्सा कर दे। इस जाजम को मुठ्ठी में पकड़े रखना। कभी आपकी माताजी ने कहा होगा। देख तेरे पिताजी से बहसबाजी मत किया कर। लाला तूं मेरा लाड़ला लाला है। पिताजी ने तेरे लिए कितना त्याग किया रे? पिताजी ने तेरे लिए बहुत त्याग किया। रिश्ते निमायें। ये रिश्ते निमाना कोई साधारण काम नहीं है। इस धर्म को नहीं भाई रिश्ता निभाना है। प्रेम से रिश्ता निभाना है–ज्ञान से।

–कैलाश 'मानव'

केवल अच्छाई अपनायें

एक बहुत ही सज्जन और सुशील व्यक्ति था। एक दिन एक आदमी उसके सामने आकर उसे अपमानित करने लगा, अपशब्द कहने लगा। लेकिन उस सज्जन व्यक्ति ने कोई जवाब नहीं दिया, और मुसकरा कर आगे बढ़ने लगा।

इस पर भी उस दुर्जन व्यक्ति का क्रोध शांत नहीं हुआ, और वह निरन्तर अपशब्दों की बौछार करता रहा, किंतु तब भी उस सज्जन व्यक्ति की मुसकुराहट कम नहीं हुई तो उस दुर्जन आदमी को और अधिक गुस्सा आ गया। उसने उस सद्गुणी पुरुष को और भी अधिक कटु वचन कहे, यहाँ तक कि उसके माता– पिता तक के

विषय में भी अपशब्द कहे। लेकिन इतने पर भी उस संभ्रांत व्यक्ति को ज़रा–सा भी क्रोध नहीं आया, और केवल मुसकुराता रहा।

आखिरकार वह असभ्य आदमी झल्लाता हुआ वहाँ से चला गया। उस सज्जन व्यक्ति के साथ उसका मित्र भी था। इस पूरी घटना को देखकर उससे रहा नहीं गया, और बोला कि ये तुमने क्या किया? उस आदमी ने तुम्हें इतना अपमानित किया, फिर भी तुम मुसकुराते रहे, तुमने उसे कुछ कहा क्यों नहीं? सज्जन व्यक्ति ने मित्र से कहा– तुम मेरे साथ, मेरे घर चलो। घर जाने के बाद वह मित्र को आदर से बिठा कर एक कमरे के अंदर चला जाता है। थोड़ी देर वह अपने हाथ में कुछ मैले–कुचैले वस्त्र लिए कमरे से बाहर आता है, और अपने मित्र से कहता है कि लो इनको पहन लो। मित्र ने हैरान होते हुए कहा– इन मैले वस्त्रों को मैं कैसे पहन सकता हूँ? इनमें से तो बदबू आ रही है।

वह सज्जन व्यक्ति उन्हें फेंक देता है, और कहता है कि तुम जिस तरह अपने स्वच्छ वस्त्रों को छोड़ कर मैले–कुचैले, गंदे वस्त्र नहीं पहन सकते, वैसे ही मैं भी किसी अनजान और असभ्य व्यक्ति के मैले– कुचैले अपशब्दों और अपमान को अपने जीवन में स्थान नहीं दे सकता। मैं अपने जीवन में अच्छे वस्त्र त्यागकर मैले–कुचैले वस्त्र कैसे पहन सकता हूँ? मैं ऐसे अच्छे विचारों को त्यागकर गंदी बातों को अपने जीवन में कैसे अपना सकता हूँ?

इसलिए हमें भी जीवन में कभी अपनी अच्छाइयों को छोड़कर, दूसरों की बुराई को नहीं अपनाना चाहिए। यदि कोई हमें आहत या अपमानित करने का प्रयास करे तो अपने आप को चंदन के उस वृक्ष की तरह बना लो, जो जहरीले साँपों से घिरा रहकर भी उनके ज़हर को धारण नहीं करता।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झिमी–झिमी रोशनी से)

पहला कार्यक्रम जब प्रसारित हुआ तो उसे देखकर कैलाश का हौसला बढ़ गया। दो–तीन कार्यक्रमों की शूटिंग के बाद वह अभ्यस्त हो गया, पूरी प्रोडक्शन टीम भी उत्साहित हो गई, धीरे–धीरे यह दैनन्दिन कार्यक्रमों का हिस्सा बन गया। आस्था चैनल धर्म प्रेमी श्रद्धालुओं में अत्यन्त लोकप्रिय है, इस कैलाश का कार्यक्रम आने का समाचार उससे जुड़े लोगों को मिला तो वे इसे देखने लगे। कार्यक्रम की प्रशंसा के फोन आते तो कईयों को मखौल उड़ाने का मौका भी मिल गया।

आलोचनाएं–समालोचनाएं, कैलाश के जीवन का अंग रही है, इनसे वह विचलित नहीं हुआ, उसकी मुख्य दृष्टि तो कार्यक्रम से प्राप्त होने वाली सहायता राशि पर थी। कार्यक्रम में सहायता राशि भेजने हेतु सम्पर्क स्थल, टेलीफोन नम्बरों व बैंक खातों के नम्बरों की विस्तृत जानकारी दी जाती थी। इसके बावजूद भी पर्याप्त राशि प्राप्त नहीं हो रही थी। कैलाश को एक बार तो लगने लगा कि कहीं इस प्रसारण में उसने गलत निवेश तो नहीं कर दिया। प्रसारित होने वाले कार्यक्रम की गुणवत्ता को लेकर भी वह संतुष्ट नहीं था।

एक दिन वह हरियाली रेस्टोरेन्ट में किसी के साथ बैठा था। चाय के दौरान ही टी. वी. पर प्रसारित कार्यक्रम की चर्चा चल पड़ी। इसी दौरान किसी ने उसे सलाह दी कि नाथद्वारा के एक चित्रकार है चरण शर्मा जो मुम्बई में कार्यरत हैं। उन्हे टी.वी. कार्यक्रम बनाने का बहुत अनुभव है। अगर उनकी सेवाएं मिल जाये तो अपने कार्यक्रम की गुणवत्ता सुधर सकती है। अन्धे क्या चाहिये–दो आंखें। कैलाश को तो ऐसे ही किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति की तलाश थी।

उनसे सम्पर्क किया, वे अपना योगदान देने पर सहमत हो गये। शीघ्र ही वे उदयपुर आ गये, वे अच्छे लेखक भी थे। उनके आने से कार्यक्रम में चार चांद लग गये।

अंश - 199

विपरीत समय में भी विनम्र बने रहना चाहिए

एक लोक कथा के अनुसार पुराने समय में गुरु अपने शिष्य के साथ यात्रा कर रहे थे। यात्रा के दौरान उन्हें पहाड़ियां पार करनी थी। रास्ते में गहरी खाई भी थी। अचानक शिष्य का पैर फिसला और वह खाई की ओर गिरने लगा। तभी उसने एक बांस को पकड़ लिया। शिष्य के वजन की वजह से बांस धनुष की तरह मुड़ गया था। लेकिन, बांस टूटा नहीं। लटके हुए शिष्य को बचाने के लिए गुरु प्रयास कर रहे थे। किसी तरह गुरु ने शिष्य का हाथ पकड़ कर उसे बाहर निकाल लिया। बाहर निकलने के बाद गुरु और शिष्य अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए। गुरु ने शिष्य से कहा कि क्या तुमने वह बात सुनी जो बांस ने कही थी?

शिष्य ने कहा कि नहीं गुरुजी, मैंने ध्यान नहीं दिया। मुझे पेड़–पौधों की भाषा भी नहीं आती है। आप ही बता दीजिए बांस ने जो कहा था। गुरु ने कहा कि बांस ने हमें सुखी जीवन का एक महत्वपूर्ण सूत्र बताया है। जब तुम खाई में गिर रहे थे, तब बांस ने तुम्हें बचाया। वह मुड़ गया था, लेकिन टूटा नहीं। उस रास्ते में बांस के कई पौधे उग रहे थे। गुरु ने एक बांस को पकड़कर नीचे खींचा और फिर से छोड़ दिया। बांस फिर से सीधा हो गया। गुरु ने शिष्य से कहा कि हमें बांस का यही लचीलापन अपने स्वभाव में भी उतारना चाहिए। जब तेज हवा चलती है, आंधी–तूफान आते हैं तो बांस विनम्र होकर पूरा झुक जाता है और तेज हवा में भी उखाड़ता नहीं है। जमीन में मजूबती से अपनी पकड़ बनाए रखता है। ठीक इसी तरह हमें भी अपने स्वभाव में विनम्रता बनाए रखनी चाहिए। जीवन में जब भी हालात विपरीत हो जाए तो गुस्से से बचें और विनम्रता का गुण न छोड़ें। सही समय की प्रतीक्षा करें और जब सब ठीक हो जाए, हमें फिर से अपनी जगह पर पहुंच जाना चाहिए।